रात्रीक्लास ओमशान्ति शिव बाबा याद है? 8-2-68

बनारस का समाचार बच्चों ने सुना। बिधुत मंडली के आये। वहां शायद दक्षिणा का रिवाज है उन्हों का। उन में एक भी समझ जाये तो कुछ वार्तालाप चले। एक भी समझ जाये तो सब बाद-विवाद करने लग पड़े। शास्त्रावाद को करते हैं वह भी देखने में भद्दा है। परन्तु इन बातों में डिबेट कर न सकेंगे। यह तो है ही सत्य बात। फिर भी बिधुत मंडली के आ तो गये ना। वास्तव में शास्त्रावाद करना इसमें दरकार नहीं। मूल बात है याद की। सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त को समझना इसको ही समझ कही जाती है। चक्रवर्ती राजा बनना है। इस चक्र को सिर्फ समझना है। इसका गायन है सेकन्ड में जीवन मुक्ति। तुम बच्चों को वन्डर लगता है आधा कल्प चलती है। ज्ञान का रिवीज भी नहीं। ज्ञान है बाप को बाप द्वारा जानना है। यह बात कितना अनकामन है। इसलिए कोटों में कोई ही निकलते हैं। टीचर थोड़े ही ऐसे कहेंगे। यह तो कहते हैं मैं ही बाप, टीचर, गुरु हूं। तो मनुष्य सुन कर वन्डर खावे। भारत को मदर कन्ट्री कहते हैं। क्योंकि अम्बा का नाम बहुत बाला है। अम्बा के मेले आदि बहुत लगते हैं। अम्बा मीठा अक्षर है। अम्बा पालना करती है। छोटे बच्चे भी मां को प्यार करते हैं। वह खिलाती है, पिलाती है सम्भाल करती है। अब अम्बा का बाबा भी चाहिए ना। या पति चाहिए। पति तो है ना। बच्चे भी हैं एडाप्टेड। यह नई बात है। प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर एडाप्शन करते होंगे। बाप ही आकर बच्चों को समझाते हैं। मेला लगता है, पूजा होती है, क्योंकि तुम बच्चे सर्विस करते हो। जितने को ममा ने पढ़ाया होगा उतने और कोई ने नहीं पढ़ाया होगा। ममा तो बहुत जगह जाती थी। उनका नामाचार जरूर है। मेला लगता है। अभी तुम बच्चे समझते हो गीता के भगवान ने जो आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना की थी वह जरा भी किसको पता नहीं है। अभी तुम युक्ति से क्लीयर लिखते भी हो। चित्र पर समझाना सहज होता है। छोटे बच्चे भी चित्र पर ही समझते हैं। अभी तुम जाते हो नई दुनिया में। बाप ने आकर रचना के आदि, मध्य, अन्त की नालेज दी है। बाप के घर का भी पता पड़ा है। बाप से भी लव है, घर से भी। बाप ही आकर ज्ञान सुनाते हैं। द्वापर से तो भक्ति ही चलती आई है। ज्ञान तुमको अभी मिलता है। पढ़ाई है तो कमाई होनी है। तो बहुत खुशी होती है। तुम हो साधारण। दुनिया को पता नहीं है बाप आकर नालेज सुनाते हैं। बाप आकर सब नई बात बच्चों को सुनाते हैं। बेहद के पुरानी दुनिया वैराग्य आ जाता है। वह रात वह दिन। बाप को और घर को याद करना है। घर तो जाकर पहुंचेंगे ना। पतित-पावन बाप ही हैं इसलिए उनको याद करते हैं। यह तो समझते हो घर तो सब को जाना ही है। बाप सभी को कहेंगे ना बच्चे मैं मुक्ति जीवन का वर्सा देने आया हूं। फिर भूल क्यों जाते हो। बुधि से समझते हो बात यथार्थ है। ऐसा न हो माया के विघ्न आ जाये। तुम्हारा बेहद का बाप हूं ना। राजयोग सिखलाने आया हूं। तो क्या श्रीमत पर न चलेंगे। फिर तो बहुत घाटा पड़ जावेगा। तुम बच्चे समझते हो बाबा का हाथ छोड़ दिया तो कमाई में घाटा पड़ जावेगा। यह है बेहद का घाटा। अगर श्रीमत पर न चलेंगे तो बेहद का घाटा पड़ जावेगा। वह है हद के फायदा और घाटा।

10-2-68 रात्रीक्लास:- अशोक अक्षर अच्छा है। अशोक बाग भी होता है। कोई भी यादगार में अशोक बाग लगाते हैं। अशोक बन रहे हैं। बच्चों को सर्विस का शौक है। जेल वालों को समझाने से वह छूट नहीं सकते हैं। बल पछताव करेंगे परन्तु सजा थोड़े ही कम हो सकते हैं। इससे तो वेश्याओं को छुड़ाना बेहतर है। यह तो जेल है। कितना समय जेल में बैठने का होगा। छुड़ाये भी सकते हैं। रोते तो होंगे जेल में। हो सकता है कुछ छुट जाये। और जेलर से सिफारिश से छूट जाये। यह मिशन है बहुत बड़ी ईश्वरीय मिशन। रावण के जेल से बहुतों को छुड़ाना है। रावण के सम्प्रदाय ही जेल में पड़े हुये हैं। ईश्वरीय मिशन है आसुरी मिशनरी से छुड़ाने लिए। मनुष्य समझते नहीं हैं हम ईश्वरीय मिशनरी के थे। फिर आसुरी के बने हैं। जब कोई किसको ट्रान्सफर करते हैं तो उसको मिशनरी कहा जाता है। इसमें तो तुम बच्चों को बहुत ही फायदा है। तुम बच्चे में ईश्वरीय गुण भी धारण होनी है। देवीगुण भी चाहिए। ज्ञान सागर भी, पवित्रता का सागर, शान्ति का